प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

नये खतरनाक कीट, पतझड़ सैनिक कीट, के प्रकोप के प्रति सचेत रहें किसान

पंतनगर। 25 जुलाई 2019। भारत में एक नये विदेशी कीट के आक्रमण के कारण किसानों, मुख्य रूप से मक्का उत्पादकों, के सामने नयी समस्या उपस्थित हुई है। इस नये कीट का नाम पतझड़ सैनिक कीट या फॉल आर्मी वर्म है। इस कीट का वैज्ञानिक नाम *स्पोडोप्टेरा फ्रुजीपरडा* है। यह कीट मुख्य रूप से मक्के की फसल को बहुत अधिक नुकसान पहुँचाता है। मक्के के अतिरिक्त यह कीट ज्वार, चरी, मंडुवा, धान एवं गन्ना की फसल को भी नुकसान पहुँचा रहा है। इन फसलों की अनुपस्थिति में यह सब्जियों एंव कपास की फसल को भी क्षति पहुँचाता है तथा अन्य कई फसलों को इससे क्षति होती है। यह कीट मूलतः उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका का मूल वासी है जहां यह सौ से अधिक वर्षों से मौजूद है। वर्ष 2016 में इस कीट का सघन प्रकोप अफ्रीका के नाइजीरिया में हुआ और देखते ही देखते मात्र 2 वर्षों में इस कीट ने 30 से अधिक देशों को अपनी चपेट में ले लिया।

यह कीट दक्षिण भारत के लगभग सभी राज्यों तथा पूरे उत्तर पूर्व में फैल चुका है। वर्ष 2019 में यह कीट 12 अन्य राज्यों मध्य प्रदेश, सिक्किम, मिजोरम, मणीपुर, नागालैण्ड, मेघालय, त्रिपुरा, आसाम, अरूणाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, झारखण्ड एवं पड़ोसी उत्तर प्रदेश तक फैल गया है। यह कीट न केवल बहुत तेजी से अपनी पीढ़ी बढ़ाता है, बल्कि बहुत बड़े क्षेत्र को अपनी चपेट में लेता है। इससे फसल को बहुत अधिक नुकसान पहुँचता है। समय रहते इसी कीट का नियंत्रण आवश्यक है।

चूँकि यह कीट हमारे देश में नया है अतः इसकी पहचान करना आवश्यक है। कीट की सूड़ी पत्तियों को खाकर नुकसान पहुंचाती है। मादा कीट मक्का की ऊपरी तथा निचली सतह पर गुच्छों में अण्डे देती है। यह अण्डे पौधे के तने के आधार पर या पत्तियों के शीर्ष गुच्छ में भी हो सकते हैं। अण्डे चपटे तथा सुनहरे पीले रंग के होते हैं जो बारीक स्केल से ढके रहते हैं। अण्डे से 2–3 दिन बाद सूंडी निकलती हैं जो शुरू में हरे रंग की होती हैं तथा सिर काले रंग का होता है, जो बाद में हरा तथा भूरा हो जाता है। इसकी सूड़ी की विशेष पहचान है कि इसके सिर पर ल (अग्रेजी अक्षर ल) का उल्टा निशान तथा पिछले हिस्से पर चार डॉट के निशान वर्ग के आकार में होते है। सूड़ियां शुरू में पत्तियों पर छोटे गोल छेद बनाती है तथा जैसे-जैसे सूड़ी पत्तियों को खाती है छेद बड़े हो जाते हैं तथा पत्तियाँ कटी फटी नजर आती हैं। अतः फसल की बढ़वार के शुरू के दिनों में इसका नियंत्रण करना आवश्यक है। इसके लिए नियमित रूप से फसल की निगरानी आवश्यक है, ताकि शुरूआती अवस्था में ही इस कीट की पहचान कर इसका प्रभावी नियंत्रण किया जा सके।

इस कीट के इस समय नियंत्रण के लिए उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करना चाहिए। अण्डों को नष्ट कर देना चाहिए। खेत में 15 फिरामोन ट्रैप प्रति एकड़ क्षेत्र में लगाना चाहिए ताकि नर कीट को पकड़ा जा सके। फसल की प्रारम्भिक अवस्था में निम्बोली का 5 प्रतिशत का सत या अजेडीरिक्टिन 1500 पी.पी.एम. का 5 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए। परजीवी जैसे *ट्राइकोग्रेमा प्रीटीओसम* को प्रति एकड़ 50,000 की संख्या की दर से एक सप्ताह के अन्तराल पर खेत में छोडा जाना चाहिए या *बैसेलिस थूरीजेनसिस* क्रुष्टाकी का 2 ग्राम प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें। रासायनिक नियंत्रण हेतु कीटनाशी रसायनों जैसे स्पाइनेटोरैम 11.7 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मिली प्रति लीटर या क्लोरएन्ट्रेनीलीप्रोल 18.5 एस.सी. को 0.4 मिली प्रति लीटर या थायोमिथाक्साम 12.6 प्रतिशत + लैम्डासाइलोहैलोथ्रिन 9.5 प्रतिशत जैड.सी. का 0.25 मिली प्रति लीटर पानी की दर से दो छिड़काव 10–15 दिन के अन्तराल पर करने चाहिए। सूड़ियों के बड़े हो जाने की अवस्था में विषाक्त चारे का प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए धान के 10 किग्रा कन के साथ दो किलो गुड़ को दो से तीन लीटर पानी में गूंथ कर 24 घंटे के लिये छोड़ देना चाहिए, तत्पश्चात 100 ग्राम थयोडिकार्ब कीटनाशी मिलाने के बाद मक्के की गोफ में डालना चाहिए।

अभी तक उत्तराखण्ड इस कीट के प्रकोप से बचा हुआ है, लेकिन उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती जनपदों में इस कीट की मौजूदगी के कारण खतरा लगातार बना हुआ है। ऐसे में किसानों को अपनी तैयारी अभी से शुरू कर देनी चाहिए। इसी क्रम में पंतनगर विश्वविद्यालय ने पहल कर इस कीट के प्रकोप से पहले ही कृषकों को जागरूक करने का कार्य प्रारम्भ किया है। यदि किसानों को इस कीट के प्रकोप का संदेह होता है तो उसका फोटो खींच कर पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा संचालित वाट्सएप नम्बर 9412120724 पर भेज कर सही पहचान तथा इसके नियंत्रण हेतु सलाह प्राप्त कर सकते हैं।

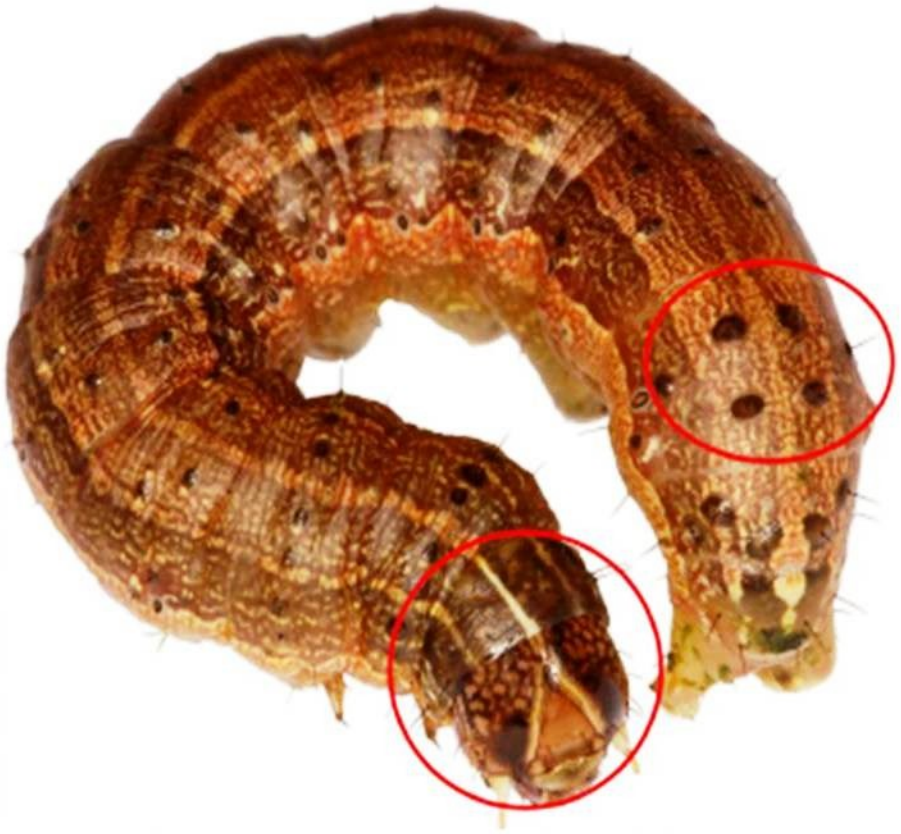

फॉल आर्मी वर्म की सूड़ी